IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

कला समेकित अधिगम AIL "दिशानिर्देन" के माध्यम से विधार्थियों को अध्यापन करवाने की विधि का समीक्षात्मक अध्धयन

डॉ. अन्तिमबाला पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, प्रशांति कॉलेज, उज्जैन
किरण धारू
शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय. उज्जैन

सारांश

'कला समेकित अधिगम' की परिकल्पना ऐसे शिक्षण-शास्त्र के रूप में की गई है जो विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञानक्षेत्रों (साइकोमोटर डोमेन) को विकास करना है। 'कला समेकित अधिगम' ने विषयों के आपसी जुड़ाव और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को कई स्तरों पर समग्रता प्रदान की है।

शिक्षण-शास्त्रीय उपकरण के रूप में इसे कार्यान्वित करने से पहले, इस रूपरेखा का देश भर के विभिन्न स्कूलों में परीक्षण किया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक और आनंदपूर्ण बनाने में यह कितना व्यावहारिक और प्रभावी है। इस प्रक्रिया में अनेक भागीदार जैसे; शिक्षक, प्रशासक वर्ग और अभिभावक शामिल थे। इन सब की प्रतिपुष्टियाँ अत्यधिक सकारात्मक और उत्साहवर्धक रही हैं।

कला समेकित अधिगम शिक्षण-शास्त्र का प्रारम्भिक कक्षा के शिक्षकों की योग्यता आधारित शिक्षण की तैयारी के लिये स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक पहल NISHTHA (National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement), में समावेशित किया गया है। इस विशाल क्षमता निर्माण कार्यक्रम, जिसमें कला समेकित अधिगम एक प्रशिक्षण मॉड्यूल है, के सुचारू क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, यह दिशानिर्देश हमारे शिक्षकों के लिये महत्वपूर्ण एवं सुचारू मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

ये दिशानिर्देश 'कला समेकित अधिगम' के एक अभिनव शिक्षण-शास्त्र के रूप में व्याख्या करते हैं और सभी शैक्षिक भागीदारों को इसके महत्व और प्रासंगिकता से अवगत कराते हैं। अगर सही अर्थों में इन दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा जाए, तो यह ऐसी जीवंत कक्षा बनाने में सहायता कर सकते हैं, जहाँ हम विद्यार्थियों को गाते हुए सुन सकते हैं; उन्हें नृत्य, अभिनय और कला के कार्य करते देख सकते हैं। साथ ही साथ, उनकी शैक्षिक अवधारणाओं की बढ़ती हुई समझ की झलक भी देख सकेंगे।

इन दिशानिर्देशों का विकास विभागीय और संदर्भ व्यक्तियों के संघर्ष की पराकाष्ठा है। ये सभी इस यात्रा का हिस्सा रहे हैं; जो अब एक महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुँच चुकी है। इस पूरी यात्रा के दौरान गहन चर्चाएँ हुईं जिनके फलस्वरूप नई अवधारणाओं, विधियों और उद्देश्यों की प्राप्ति हुई। इसके फलस्वरुप 'कला समेकित अधिगम' एक शिक्षण-शास्त्र का रूप ले पाया।